हिंदी साहित्य में पर्यावरण विमर्श

कामिनी जनार्दन मोहिते
पीएच डी शोधार्थी,
मोबाइल नंबर ९१६४३०३०९६
Email : solapuretasneem@gmail.com

सारांश:-

पर्यावरण मानव जीवन के विभिन्न आयामों को सख्त रूप से प्रभावित करता है। हिंदी साहित्य में सभी ख्याति प्राप्त साहित्यकारों ने अपने काव्यों, कहानियों, उपन्यासों, नाटकों में बखूबी प्रकृति का चित्रण किया है। प्रकृति के चित्रण के बिना साहित्य अधूरा है। साहित्य का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि मानव और प्रकृति के बीच अटूट गहरा संबंध है। हमारे साहित्य में भी पर्यावरण की चिंता केंद्र बिंदु में रही है| हिंदी साहित्य की परंपरा में साहित्यकारों ने पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी को निर्वाहन करते हुए लगातार समाज को इस ज्वलंत समस्या के बारे में जागरूक करने का प्रयास किया और यह प्रयास अनवरत जारी है।

वैदिक काल के अध्ययन से से पता चलता है की तत्कालीन सभ्यता के लोग प्रकृति की पूजा करते थे धरती उनकी माता थी। जिसकी रक्षा के लिए तथा जिस पर जीवन बनाएं रखने के लिए अपनी सभी कर्तव्यों का पालन करते थे।

बीज शब्द: पर्यावरण, प्रकृति, संस्कृति।

प्रस्तावना:-

पर्यावरण शब्द का निर्माण दो शब्दों से मिलकर हुआ है। 'परि' तथा आवरण का अर्थ है 'चारों ओर' तथा आवरण का अर्थ है 'घेरे हुए' अर्थात जो हमें चारों ओर से घेरे हुए हैं पर्यावरण कहलाता है। पर्यावरण शब्द एवं उसका अर्थ अत्यंत व्यापक है। जिसमें सारा ब्रह्मांड ही समा जाता है। हमारा यह संसार आकाश, जल, वायु पृथ्वी अग्नि तथा वृक्ष नदी पहाड़ समुद्र एवं पशु पक्षी से आवृत्त है। मनुष्य के भोगवादी प्रवृत्ति ने आज पर्यावरण का संतुलन को खतरे में डाल दिया है। बढ़ते हुए प्रदूषण के कारण पर्यावरण असंतुलित होता जा रहा है। यही कारण है कि हमें अकाल, बाढ़, सूखा, आदि का निरंतर समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। जंगल कटने के कारण वन संपदा का दोहन करने के कारण वन संपदा का दोहन तो हुआ ही है। इससे जल और शुद्ध वायु पर भी गहरा प्रभाव पड़ रहा है। जंगल की अंधाधुंध कटाई से वर्षा कम हो गई है और नदियां सूखने लगी है। शहरों में बढ़ती आबादी में जमीन के नीचे से पानी को सोख लिया है।

पर्यावरण हमारे चारों ओर का वह परिवेश है जो हमें नित्य प्रभावित करता है। आज का पर्यावरण मुख्य रूप से जनसंख्या वृद्धि से अभी शापित हो गया है।

शोध विषय का विश्लेषण:-

हिंदी साहित्य में आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक प्रकृति को हमेशा विशिष्ट स्थान मिला है। पर्यावरण चेतना की समृद्ध परंपरा हमारे साहित्य में रही है।भारतीय संस्कृति में मूलत:अरण्य संस्कृति रही है, अरण्य अर्थात वन। जन्म से ही मनुष्य का नाता प्रकृति की आराधना तथा पर्यावरण की संरक्षण करना हमारा पुरातन भारतीय चिंतन है। प्रकृति के साथ सह अस्तित्व की भावना से युक्त जीवन व्यतीत करने वाले हमारे पूर्वजों, ऋषियों, एवं विद्वानों ने हजारों वर्षों पहले ही पर्यावरण महत्व को समझ लिया था।

हिंदी साहित्य में प्रारंभ से ही प्रकृति के अनावश्यक दोहन शोषण का विरोध किया गया है। अतः प्रकृति के प्रति प्रेम संरक्षण आत्मानुभूति तथा किसी को भी हानि न पहुंचाने का भाव हिंदी साहित्य में मिलता है।

वर्तमान में अब तकनीक बदल रही है। आज के समय में अधिकतम कार्य ऊर्जा उत्पादन विद्युत उत्पादन नाभिकीय विखंडन एवं नाभिकीय संलयन आदि विधियों से किया जा रहा है। इन से अधिक मात्रा में रेडियोएक्टिव वि किरण उत्सर्जित होता है। लोगों के सामने त्वचा रोग, कैंसर, फेफड़ों की हानि, आंखें, सांस लेने की बीमारियां होने का कारण है।

वर्तमान परिवेश की पर्यावरण की समस्याएं जैसे ओजोन परत का क्षय, ग्लेशियरों का पिघलना, प्रदूषित जल, वृक्ष काटना, भूस्खलन, प्रदूषण जलवायु परिवर्तन इत्यादि मनुष्य को अपनी जीवन शैली के बारे में पुनर्विचार के लिए प्रेरित कर रही है।

हिंदी साहित्य में पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं प्रकृति के सौंदर्य चित्रण व मानवीकरण से लेकर पर्यावरण प्रदूषण भूमंडलीकरण व अन्य महत्वपूर्ण समस्याओं पर मंथन किया गया है चिंतन करने के साथ ही साथ उन समस्याओं का तार्किक उपयुक्त समाधान भी प्रस्तुत किया गया है।

भारतीय साहित्य और दर्शन संपूर्ण रुप से पर्यावरण पर केंद्रित रहा है। मानव का प्रथम कर्तव्य होता है कि वह प्रकृति की रक्षा करें। हिंदी साहित्य में प्रारंभ से ही प्रकृति के अनावश्यक दोहन का विरोध किया गया है। हिंदी साहित्य में भक्तिकाल के कवियों में जैसे कबीर, रहीम, जायसी, तुलसीदास, मीराबाई आदि ने अपनी रचनाओं में प्रकृति का कई स्थानों पर रहस्यमय वर्णन किया है।

तुलसीदास ने रामचरितमानस में लक्ष्मण और सीता को वृक्षारोपण करते हुए दिखाया है, यथा–

"तुलसी तरुवर विविध सुहाए
कहूं कहूं, सीये, कहूं लखन लगाए।"

हिंदी साहित्य में आदिकाल से लेकर रीति काल तक किसी न किसी रूप में कवियों ने काव्य में प्रकृति एवं पर्यावरण को वर्णित किया है वही आधुनिक काल से पर्यावरण के प्रति प्रौढता दृष्टिगोचर होने लगती है।

आधुनिक काल में हजारी प्रसाद द्विवेदी, अयोध्या सिंह उपाध्याय, श्रीधर पाठक, रामनरेश त्रिपाठी आदि ने अपने काव्य में प्रकृति एवं पर्यावरण सौंदर्य का चित्रण सुंदरता के साथ किया है। अयोध्या सिंह उपाध्याय हरि ओम जी के प्रिय प्रवास महाकाव्य में प्रकृति का वर्णन मिलता है।

दिवस का अवसान समीप था।
गगन था कुछ लोहित हो चला।
तरु शिका पर थी अब राजती।
कमलिनी – कुल – वल्लभं का प्रभा।

छायावादी काव्य में प्रकृति संबंधी कविताओं के बाहुल्य और उसमें पति फलित प्रकृति पर दृष्टिकोण को देखकर कुछ विचारकों ने छायावाद को प्रकृति काव्य भी कहा है। इस काल के छायावादी कवियों में महादेवी वर्मा, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी, सुमित्रा नंदन पंत आदि ने अपने काव्य में प्रकृति एवं पर्यावरण चित्र को साथ ही संजोया है। जिसमें जयशंकर प्रसाद जी ने अपने महाकाव्य कामायनी में प्रकृति के विविध रूपों का वर्णन इस प्रकार किया है।

"प्रकृति रही दुर्जन पराजित हम सब भूलो थे मद में|
भोले थे, हां तिरते केवल सब बिलासिता के मद में।
वे सब डूबे डूबे बिभव, बन गया पारावार|

प्रगतिवाद व छायावाद के विरोध में प्रयोगवाद आया। इस काल के प्रयोगवादी कवियों में हीरानंद सच्चिदानंद वास्तायन, मुक्तिबोध, नेमीचंद्र जैन, भारत भूषण अग्रवाल, नंददुलारे वाजपेयी। अज्ञेय जी की कविता असाध्य वीणा में प्रकृति के बारे मैं चित्रण किया है इस प्रकार—

हां मुझे स्मरण है,
बदली कौंध पत्तियों पर वर्षा बूंदों की पटपट,
घनी रात में महूए का चुपचाप टपकना।
चौके खग शावक की चिहूंक l
शिलाओं को दुलार ते वन झरने के
द्रुत लहरी ले जल का कल– निनाद।

निष्कर्ष:-

आज संपूर्ण विश्व ग्लोबल वार्मिंग जैसे शब्द से भलीभांति परिचित और पीड़ित भी है। कार्बन गैसों के उत्सर्जन से हमारे जीवन की सुरक्षा पहुंचने वाली ओजोन परत में छिद्र हो गया है, धरती का तापमान दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है।

पर्यावरण संतुलन आज की एक गंभीर आवश्यकता है, जिसे बनाने में में हम सभी को अपना सहयोग देना ही होगा। केवल पर्यावरण के संरक्षण द्वारा ही हम अपने जीवन उसे अस्तित्व व मानव जीवन की गरिमा की रक्षा कर सकते हैं।

आज जहां पर्यावरण संरक्षण के लिए लोगों में जागरूकता फैलाने के लिए विश्व में एक दिवस निर्धारित किया गया है। जिसे पर्व के रूप में मनाया जाता है। भारतीय संस्कृति सदैव प्रकृति और पर्यावरण के महत्व एवं संरक्षण के प्रति सदैव ही जागरूक रही है।

संदर्भ ग्रंथ:–

1. 'रामचरितमानस', तुलसीदास, २/236/3
2. 'प्रियप्रवास', अयोध्या सिंह उपाध्याय, 'हरिऔध' प्रथम सर्ग, प्रथम संस्करण 1914
3. 'कामायनी', जयशंकर प्रसाद, प्रथम संस्करण 1995